P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-5 * (Part-1) January- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय परिस्थितियां और सामाजिक अन्तर्विरोध

सुरेश गर्ग
व्याख्याता,
हिन्दी विभाग,
परमहंस स्वामी माधवानंद महाविद्यालय,
जाडन, पाली, भारत

सारांश

मानव आज जिस समाज में रह रहा है प्रारंभ में उसका स्वरूप इतना विकसित नहीं था। समय के साथ–साथ आये परिवर्तनों के कारण सभ्यता का विकास हुआ और इसके साथ ही समाज का विकसित रूप देखने को मिल रहा है। समाज में लगातार आये परिवर्तनों के साथ ही समाज में टकराव एवं बिखराव भी बढ़ता जा रहा है जिससे समाज में अन्तर्विरोध बढ़ता जा रहा है। समाज में आए सामाजिक, राजनैतिक एवं पशासनिक बदलाव सामाजिक अन्तर्विरोध के मुख्य कारण है। प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय समाज में देखे जाने वाल सामाजिक अन्तर्विरोध का विस्तृत विवेचन किया गया है।

मुख्य शब्द : अन्तर्विरोध, सभ्यता, वस्तुस्थिति, स्वतंत्रता।

प्रस्तावना

स्वतंत्रता के पश्यात भारतीय परिस्थितियां और सामाजिक अन्तर्विरोध में समाज का अर्थ, सामाजिक अन्तर्विरोध की परिभाषा एव भारतीय समाज में पनपते सामाजिक अन्तर्विरोध के कारणों के साथ आ रहे बदलाव को दृष्टिपात करना। सामाजिक अन्तर्विरोध से उत्पन्न वर्तमान सामाजिक समस्याओ को भी उजागर करना ।

अध्ययन का उद्देश्य

स्वतन्त्र भारत की सामाजिक स्थिति एव बदलती परस्थितिया में व्यक्ति, परिवार, समाज में पनपते अन्तर्विरोध को दर्शाना एव इसके कारणों को खोजना, समाज में व्याप्त अन्तर्विरोध के वर्गीकरण के माध्यम से व्यक्ति एव समाज में स्वतंत्रता के बाद की वस्तुस्थिति का चित्रण करना।

समाज का अर्थ

भारतीय सामाजिक संरचना का इतिहास बहुत प्राचीन हैं। समाज को बनने व विकसित होने के बीच कई उतार–चढाव आए। कई युगों के बाद सामाजिक ढांचा बना। जिसने समय समय पर परिवर्तनों की राह अपनाई तो कई रूढ़ियों व परम्पराओं को विकसित किया, व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज। समाज में राज्य, सेना, धर्म, संस्कृति, वर्ण, जाति, अर्थ ने अपना स्थान ग्रहण किया। इस प्रकार एक समाज का निर्माण हुआ जिसमें व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण होता हैं व्यक्ति इस का अभिन्न अंग हैं।

समाज का सामान्य शाब्दिक अर्थ हैं – साथ–साथ जीवन यापन करते हुए मुश्किलों, कठिनाइयों, खुशियों व प्रेम से जीना। समाज में ही व्यक्ति का हित निहित होता हैं। मनेजर पाण्डेय ने समाज का अर्थ इन शब्दों में बताया "समाज से अभिप्राय सामुदायिक जीवन की ऐसी, अनवरत एवं नियमन व्यवस्था से हैं, जिसका निर्माण व्यक्ति पारस्परिक हित तथा सुरक्षा के निमित्त जाने अनजाने कर लेते हैं।" प्रारंभ में मनुष्य छोटे–छोटे कबीलों में रहता था तथा भोजन की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान तक भ्रमण करता रहता था। कबीले से बढ़ता हुआ गांव, शहर, राज्य, देश, विश्व में परिणित हो गया। धीरे–धीरे सभ्यता का विकास हुआ। सभ्यता के विकास के साथ मानव समाज की उद्भव हुआ जिसमें समाज कई जाति एवं वर्गों में बंट गया। आज पूरा विश्व जिसमें व्यक्ति अपना जीवन यापन करता है एक पूरा समाज हैं जिसमें उसके हक, अस्तित्व, सुरक्षा, अर्थ, धर्म, संस्कृति सम्माहित रहती हैं।

भारतीय समाज

भारतीय की सभ्यता विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में से एक है। हडप्पा कालीन व मोहन जोदडो सभ्यताओं में समाज के अवशेष मिलते हैं जहां से इसकी शुरूआत मानी जा सकती हैं। भारतीय समाज में राजतंत्र व मुखिया

व्यवस्था के पनपने के बाद, समाज सीमा में बंध गया, उसके क्षेत्र बन गये, एक क्षेत्र पर राज करने वाला राजा कहलाया, बाकि जनता उसकी प्रजा न्याय, धर्म, अर्थ, संस्कृति, राजा के फरमान के आधार पर चलती रही। भारत वर्ष कई वर्षों तक मुगलों के अधीन रहा। कई वर्षों तक गुलामी में रहने के कारण भारतीय संस्कृति पर मुगल संस्कृति का गहरा प्रभाव पड़ा।

मुगलों के बाद कई वर्षों तक भारत ब्रिटिश शासन के अधीन रहा। ब्रिटिश शासन में भारतीय समाज में आमुलचूल परिवर्तन आए। शिक्षा, पश्चिमीकरण भारतीय समाज में अंग्रेजों की देन है जिससे एक ओर जहां समाज शोषित हुआ तो दूसरी ओर मानसिक रूप से आज तक आजाद नहीं हो पाया। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में कई भारतीयों के शहीद होने के बाद खून से सना हुआ आजाद भारत मिला जिसके दो टुकड़े धर्म के नाम पर कर दिये – एक पाकिस्तान, दूसरा भारत। यह टुकड़े क्षेत्र के नहीं समाज की भावनाओं के थे।

सामाजिक अन्तर्विरोध

आजादी के बाद भारतीय समाज में परिवर्तन आया। शिक्षा, पश्चिमीकरण, मीडिया, जिसने समाज को परिवर्तन की ओर धकेला। इस परिवर्तन में कहीं विकास है तो कई समस्याऐं भी उत्पन्न हो गई जिसमें राजनीतिकरण, भूमण्डलीकरण, आर्थिकोकरण, संयुक्त परिवारों का टूटना, एंकाकीपन, भय संत्रास, पीड़ा ने परिवर्तनों के कारण जन्म लिया। वर्तमान समाज में व्यक्ति एक मशीन बन गया। यह सब पाश्चात्य सोच के कारण हुआ। इस सोच के कारण समाज को एक नई दृष्टि तो मिली लेकिन वह संकुचित सोच से ग्रसित हो गया। परिवर्तन के कारण अमीरी गरीबी का भेद सामने आया। राजनीति में आर्थिकोकरण हो गया। इन कारणों से समाज में विसंगतियों बढ़ी, व्यक्ति व समाज में टहराहट उत्पन्न हो गई। जिस अन्तर्विरोध रूपी बीज को वर्तमान समाज में जन्म दिया अर्थात् व्यक्ति अन्तर्विरोध में घिर गया। जिसे सामाजिक, अन्तर्विरोध कहना ही ठीक रहेगा। क्योंकि समाज में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, साहित्यिक सभी क्षेत्रों में हलचल शुरू हो गई। हलचल के कारण समस्याऐं, विसंगतियां, परिवर्तन आने लगे, जिससे समाज चारों तरफ से घिर गया। वर्तमान समाज अन्तर्विरोध की गिरफ्त में आ गया जहां नई दृष्टि नजर नहीं आती बल्कि चारों तरफ विसंगतियां ही दिखती है।

वर्तमान समय के साथ आये बदलाव से उत्पन्न व्यवस्थाओं से व्यक्ति व समाज में टकराहट पैदा हुई हैं उसे ही सामान्य भाषा में 'अन्तर्विरोध' कहा जा सकता है। अन्तर्विरोध के कारण ही चारों तरफ अन्याय, असुरक्षा, भय, अव्यवस्था, अकेलापन व्याप्त हो रहा है जिससे व्यक्ति, समाज का अभिन्न अंग होने के बावजूद समाज से दूर होता हुआ नजर आता है। स्वतंत्रता के बाद समाज में इतनी विसंगति आ गई। जिससे समाज में कई अन्तर्विरोध आ गये। इसका मुख्य का कारण सामाजिक परिवर्तन हैं। यह परिवर्तन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक सभी क्षेत्रों में आ रहे हैं जो समाज में विसंगतियां उत्पन्न करते हैं। यह सभी वर्तमान भारतीय समाज में अन्तर्विरोध हैं। हम कह सकते हैं समाज में राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक परिवर्तनों ने नये रूप ग्रहण किये जिसने व्यक्ति का सीधे रूप से प्रभावित किया जिससे समाज में टकराहट उत्पन्न की, व्यक्ति की भावनाओं को आघात पहुँचा और वह मन से हार गया। यह हार ही उसका विद्रोह है। वह अपने समाज, को ही वर्तमान समस्याओं के कारण अलग मानने लगा। यही 'सामाजिक अन्तर्विरोध' हैं। आज हमारे चारों तरफ अन्तर्विरोध के कई रूप देखे जा सकते हैं जिनमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक अन्तर्विरोध, धार्मिक, सांस्कृतिक अन्तर्विरोध मुख्य है।

भारतीय समाज में सामाजिक अन्तर्विरोध

स्वतन्त्रता के बाद भारतीय समाज में अचानक बदलाव आने लगे। स्वतंत्रता के बाद भारत में सबसे अधिक गिरावट हमारे सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों में देखी गई है। पहले भारतीय समाज संस्कारों के लिए जाना जाता था और आज उसके संस्कार धूमिल हो गये। परिवारों का टूटना, एकाकीपन, समाज में बढ़ते अपराध, असुरक्षित नारी, हत्या, एकाकीपन, बलात्कार, आतंकवाद, जातिगत राजनीतिक, पश्चिमीकरण, मीडिया का प्रभाव, अश्लीलता, भ्रष्टाचार, अपहरण, आदि ऐसे कारण हैं जिससे स्वतन्त्र भारत के समाज में विसंगतियां उत्पन्न हुई और जिससे आम आदमी रोजमर्रा की परेशानियां झेल रहा हैं व स्वतन्त्रत होने के बावजूद इन कारणों से अपने आप को असुरक्षित महसूस करता हैं।

स्वतंतत्रता के पश्चात् जो व्यवस्थाऐं विकसित हुई उनके कारण आज भारतीय समाज में दो वर्ग देखने को मिलते हैं–पहले वर्ग में, नेता, अफसर, व्यापारी तथा उनके आश्रित लोग जिनकी संख्या बहुत कम है परन्तु देश के अर्थतंत्र और शासन पर इनका ही एकाधिकार है। दूसरे वर्ग में मध्यमवर्ग, निम्न मध्यम वर्ग तथा किसान–मजदूर आदि हैं जिनकी संख्या पहले वर्ग की संख्या की तुलना में हजारों गुना हैं परन्तु उन्हें शोषण, अन्याय, अत्याचार, उपेक्षा–अपमान तथा कष्टों का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए सामाजिक, अन्तर्विरोध वर्तमान समाज में पनप रहा हैं।

भारतीय समाज में सामाजिक अन्तर्विरोध के कारण

समाज में आज जो अन्तर्विरोध देखने को मिल रहे हैं उनके कई कारण है। सामाजिक अन्तर्विरोध के मुख्य कारणाों को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है

समाज में व्याप्त तनाव

आजादो के बाद समाज में व्याप्त विषमताओं ने व्यक्ति के मन में असुरक्षा की भावना उत्पन्न कर दी जिसके कारण वह हमेशा संत्रास, तनाव और घुटन से ग्रस्त और पीड़ित नजर आता हैं। व्यक्ति का जीवन इतना असुरक्षित हो उठा हैं कि जीवन–यापन कठिन होता जा रहा है। भारत में राजनीतिक, समाज–व्यवस्था, धर्म, नीति आदि के प्रति भारतीय समाज का व्यक्ति घोर अनास्था से भर उठा है। उसमें असुरक्षा और अनास्था की भावना घर

कर गई जिसके कारण वर्तमान व्यवस्था से उसके मन में अन्तर्विरोध आ गया।

दो पीढ़ियों का अन्तर्विरोध

वर्तमान समाज में जब परिवतन तीव्र गति से होता है तो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी का संघर्ष शुरू हो जाता हैं। आजादी के बाद पश्चिमीकरण व आधुनिकता के कारण पुरानी पीढ़ी व युवा पीढ़ी में विचारों की टकराहट पैदा हो गई। एक ओर पुरानी पीढ़ी परम्परागत मान्यताएं और आदर्शवादी जीवन मूल्यों की पक्षधर थी तो वहीं नई पीढ़ी शिक्षा, मीडिया, पश्चिमीकरण, आधुनिकोकरण के कारण समाज के दण्ड विधान व परम्पराओं पर करारी चोट करती हैं। पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी के परिवर्तन से असन्तुष्ट और अप्रसन्न हैं। दोनों के बीच अन्तर्विरोध है एक दूसरे के विचारो को लेकर। इस प्रकार वर्तमान समाज में एक तनाव, घुटन और छटपटाहट की सी स्थिति उत्पन्न हो गई जो सामाजिक अन्तर्विरोध का रूप है दोनों पीढ़ियों के बीच।

हाशिये पर आते कुछ वर्ग

वर्तमान भारतीय समाज की परिस्थितियों व समस्याओं के कारण समाज में एक वर्ग दूसरे वर्ग को धकेल रहा है अर्थात् दोनों के मध्य वर्ग संघर्ष पाया जाता हैं। इस संघर्ष के कई कारण हैं आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक। विभिन्न प्रजातियों के बीच के अंत संबंध के उत्तरोत्तर विकास, किसी समुदाय या उस समुदाय के सदस्य द्वारा अन्य समुदाय में व्यवस्थित होने की प्रक्रिया, सांस्कृतिक परिवेश म विकसित हो रहे व्यक्ति के सामाजोकरण की प्रक्रिया, अथवा किसी समुह या व्यक्ति द्वारा स्थान के बाद उत्पन्न विपरीत परिस्थितियां के कारण, रहने का संकट झेल रहे अन्तर्विरोध के शिकार हो गये समाज में व्यक्ति इन कारणों से हाशिये पर आ गये।

वर्तमान भारतीय समाज के अध्ययन से पता चलता है कि मुख्य धारा के भीतर और बाहर कुछ ऐसे लोग, समूह और समाज हैं, जो सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, अथवा आर्थिक कारणों से हाशिये पर चले गये। बहुत सारे लोग, समुदाय और समूह ऐसे हैं, जो असंगठित होने के कारण शोषण दमन और उपेक्षा के कारण अन्तर्विरोध के शिकार हो रहे हैं। इस कारण अपने ही समाज, समूह, अथवा समुदाय में उपेक्षित, प्रताड़ित और अप नबीपन का जीवन यापन व्यतीत करने के लिए बाध्य हो जाते हैं। भारतीय समाज में 'हाशिये के लोग' इन्हीं लोगों का समूह हैं जो राष्ट्रीय जीवन की मुख्य धारा के भीतर और बाहर हाथिये पर जीने के लिए विवश हैं।

जातीय व्यवस्था

भारतीय समाज जो वर्गो जातियाँ में बंटा हुआ तथा छुआछुत से ग्रसित था उसे स्वतन्त्रता के बाद लगा की यह अव्यवस्था खत्म हो जाएगी, सभी को समानता मिलेगी कोई छोटा बड़ा नहीं होगा जनता के शासन में भेदभाव खत्म हो जाएगा लेकिन हमारा देश वर्तमान समय में जांत पांत की बीमारी से पूरी तरह ग्रसित हैं। अन्तर्विरोध मत है कि जहाँ जाति व्यवस्था को खत्म होना चाहिए था वहाँ वर्तमान समय में राजनोतिक दल बंदी के कारण यह तो मजबूत होती जा रही है। वर्तमान व्यवस्था में जाति के नाम से व्यक्ति ठगा जा रहा हैं। जाति व धर्म ने समाज में कई विसंगतियां उत्पन्न कर दी है। समाज ने छोटे बड़े का भेद करते हुए एक को अछूत व निम्न बना दिया क्योंकि उसका जन्म निम्न परिवार में हुआ हैं। उसका गुनाह सिर्फ इतना है कि वह दलित हैं। सवर्ण समाज उसके सत्य युगों–युगों से अत्याचार करता आ रहा है उसकी भी मजबूरी है कि वह यह अत्याचार सहन कर रहा है। स्वतन्त्रता के बाद दलितों ने अपने अधिकारों को पहचाना, शिक्षा के माध्यम से शिक्षित होने पर समानता शब्द की पहचान हुई, मिडिया के प्रचार से अछूतों ने संविधान के द्वारा इस भेदभाव रूपी अजगर को पहचाना और उनसे अपने ही रंग रूप जाति धर्म के समानाधिकार के लिए संघर्ष किया।

समाज में जातिवाद अंत का अंतविरोध वर्तमान समय में जाति व धर्म के नाम पर व्यक्ति तो घटे बजा रहा है सब रूप से समान होने के बावजूद उसे वह जगह नहीं मिलती जिसका वह अधिकारी है इसलिए दलितों के मन में सवर्णो के प्रति एक विद्रोह वह ही एक अन्तर्विरोध हैं। जातिगत अन्तर्विरोध भारतीय समाज में इतना है कि जहाँ जाति में बंटी हुई हैं और इस जाति व्यवस्था के कारण समाज में पोड़ित वर्ग का उग्र रूप बढ़ रहा हैं। स्वतन्त्रता के बाद जहॉ जातिय अन्तर्विरोध खत्म होना चाहिए था वहाँ राजनीतिकरण ने समाज में जातिय अन्तर्विरोध को बढ़ाया हैं। भारतीय नेताओं में जातियता के भाव कितने जबर्दस्त है यह सभी जानते हैं। इसी भाव के कारण हमारा सामाजिक जीवन बहुत गंदा हो गया। राजनीतिक दल तो पहले से ही अन्तर्विरोध और जातिय दलबन्दी की अवस्था को और भंयकर बना देते हैं। जातोय अन्तर्विरोध सिर्फ हिन्दुओं में ही नहीं बल्कि मुसलमान और दूसरे धर्म के नेताओं में भी हावी है।

वर्तमान समय में सामान्य जन ने जातियता के अन्तर्विरोध को मोडिया व शिक्षा के माध्यम से पहचाना हैं। "जाति मजहब, नस्ल, रंगभेद वाली सियासत के घिनौनेपन से वाकिफ हो गया हैं।" सामान्य जन ने पहचान लिया हैं जातिय अन्तर्विरोध को आम समाज में यह अन्तर्विरोध पाया जाता है तो सिर्फ समाज में कुछ कट्टर या जुनूनी लोगों के कारण जो जातिवाद के नाम से समाज में विसंगतियां फैलाते हैं।

परिवारों का विघटन

व्यक्ति से परिवार व परिवार से समाज का निर्माण होता है। व्यक्ति के सामहिक रूप से रहने व जिम्मेदारियां पूर्ण जीवन यापन करना परिवार में प्राचीन समय से ही यह उद्देश्य रहा है। परिवार जिसका मुखिया पुरूष होता है वह अपनी पत्नी व बच्चों के साथ खुद कमाता व पूरे परिवार की जिम्मेदारी चलाता है। व्यक्तिगत संबंध बनाए रखना इसकी महत्वपूर्ण धूरी हैं। इसके एकल व संयुक्त दो रूप होते है। परिवार में ही बच्चों को संस्कार मिलते है तो रीति, रिवाज, संस्कृति, धर्म, जाति आदि की पहचान परिवार से ही होती हैं। समाज में

परिवार के आधार पर स्थान निर्धारण होता है। वैवाहित संबंध एक परिवार से दूसरे परिवार में सम्पन्न होते हैं। दादा–दादी, चाचा–चाची, ताऊ–ताई, पति–पत्नी, बच्चे आदि? मिलकर के संयुक्त परिवार की परिभाषा को पूर्ण करते है। ऐसा माना जाता है कि अच्छे परिवार से ही अच्छे समाज का निर्माण होता हैं बचपन, जवानी, बुढ़ापा तीनों रूपों को पारिवारिक जीवन में व्यक्ति पूर्ण करता है। समस्याऐं दुःख, सुख परिवार के हिस्से होते है इसमें ही संस्कार पलते हैं। अर्थात् व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण समाज में होता है। लेकिन परिवार वह रूप है जो व्यक्ति को आधार देता है उसमें सस्कार भरता है उसे अपना अस्तित्व व नाम देता है तब व्यक्ति समाज रूपी समुद्र में गोते लगाता है। अगर परिवार जितना सुदृढ़ होगा समाज उतना ही विकसित होगा अगर परिवार टूटने लगेगा तो समाज अपने आप विखण्डित हो जाएगा।

समाज में मुख्य धुरी परिवार हैं। स्वतन्त्रता क बाद वर्तमान व्यवस्था के कारण समाज की मुख्य धुरी टूटती सी नजर आती हैं। परिवार जहॉ सभी का प्रेम पलता था आज परिवार में प्रेम गायब होता जा रहा है। सामाजिक अन्तर्विरोध के कारण इसमें विसंगतियां आ गई है। माता–पिता से लड़का जहॉ ऑख भी नहीं मिला सकता था आज आधुनिकता व वैश्वीकरण के दौर में वह मां बाप के सामने सिगरेट पोता है नशा करता हैं। अपने निर्णय खुद लेता हैं। मां–बाप के द्वारा किये हुए रिश्ते उसे पंसद नहीं वह युवावस्था की जवानी में कुछ ऐसे निर्णय ले लेता है जिससे परिवार टूटने लगता है। मां–बाप को वृद्धाश्रम की शरण लेनी–पड़ रही हैं। पति–पत्नी के रिश्तों में दरारें आ गई है जिससे बच्चों के भविष्य पर कई सवालिया प्रश्न उठने उगे है। रोजमर्रा के काम की थकान व आवश्यकता से अधिक खर्च के कारण परिवार में आर्थिक संकटों ने बाढ़ ला दी हैं जिससे परिवार का मुखिया व परिवार के अन्य लोग भी आजीविका के लिए संघर्ष कर रहे है। जिसके कारण बच्चों को वात्सल्य प्रेम नहीं मिल रहा है।

आज के वर्तमान समय में चारों तरफ अव्यवस्था फैली हुई है जिससे समाज कई तरह की विसंगतियां से घिर गया हैं। समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो गया हैं जिससे अन्तविरोध की स्थिति आ गई है। व्यक्ति विद्रोही हो गया है वह अपने आप में संकुचित बन गया है उसमें असंतोष घृणा, आत्महत्या ने घर कर लिया है क्योंकि समाज की कोई दृष्टि व दिशा नजर नहीं आती हैं इसलिए अन्तर्विरोध से घिरा हुआ दिखता है समाज। आज के विघ्वसंकारी समय में एक सम्पूर्ण समाज की संरचना जटिल होती जा रही है। आन्तरिक व बाहरी व्यवस्थाओ से मनुष्य पीड़ित हो उठा है वह छटपटा रहा है स्वतन्त्रता उसे नजर नहीं आ रही है वह वर्तमान व्यवस्था व समाज से मोह भंग की स्थिति में आ गया है।

सामाजिक असमानता

भारतीय संविधान द्वारा सामाजिक असमानता के सभी रूपों को समाप्त करने का प्रयास करने का प्रयास किया गया है लेकिन व्यवहार में स्थिति यह हैं कि आज भी भारतीय समाज जातिगत आधार पर विभाजित है, आज भी जन्म के आधार पर उच्च व निम्न जातियां पाई जाती हैं। आज भी निम्न जातियां को घृणा की दुष्टि से देखा जाता हैं। संविधान द्वारा अस्पृश्यता को गैर–कानूनी घोषित किए जाने के बावजूद समाज में अस्पृश्यता की भावना विद्यमान है। देश की प्रशासनिक सेवाओं में आज भी उच्च वर्ग का ही प्रभुत्व हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से ही हमारे नेताओं द्वारा सामाजिक न्याय के नाम पर स्वार्थ की राजनीति की जाती हैं। दलितोत्थान के नाम पर समाज के कुछ विशेष वर्गो को शिक्षा प्राप्ति से लेकर रोजगार प्रदान करने तक आरक्षण की जो संवैधानिक सुविधा प्रदान की गई, कालान्तर में इस व्यवस्था ने भारतीय समाज का सामाजिक विभाजन किया। इससे सामाजिक रूप से ऊॅचे व नीचे कहे जाने वाले समाज के वर्गो के बीच की खाई और गहरी ही हुई हैं। आरक्षण ने भारतीय समाज तथा लोकतन्त्र में नए तनावों को जन्म दिया हैं जो वर्गीय संघर्ष, हरिजन समस्या, हिन्दु–मुस्लिम संघर्ष के रूप में सामने आए हैं। समाज में आज भी व्याप्त सामाजिक असमानता ही सामाजिक अन्तर्विरोध का मुख्य कारण भी है।

क्षेत्रवाद

भारतीय राजनीतिक अन्तर्विरोध में क्षेत्रवाद महत्वपूर्ण कारण हैं। देश की विभिन्नताओं में भी इसका स्थान हैं। प्रादेशिकता या क्षेत्रवाद पर आधारित विभिन्नता ने भारत में बहुत ही भयावह स्थिति प्राप्त कर ली हैं। इसने शांति एवं व्यवस्था को बनाये रखने में तो बाधा उपस्थित की ही है, साथ ही साथ इसने देश की अखण्डता को भी जबर्दस्त चुनौतो प्रस्तुत की हैं। क्षेत्रवादिता का तात्पर्य राष्ट्र की तुलना में किसी क्षेत्र विशेष के प्रति लगाव रखना। क्षेत्रवाद राष्ट्रीयता की भावना का विरोध है। यह राजनीति व समाज में देशव्यापी समस्या है जिसके कारण से समाज व राजनीति प्रभावित होती रहती हैं। क्षेत्रोय मुद्दों को लेकर भारत में कई बार आन्दोलन होते रहे हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान में भारतीय समाज विभिन्न जातियों, सम्प्रदायो और वर्गों में बंटा हुआ है। लम्बे समय तक अंग्रेजी शासन के अधीन रहने क कारण भारतीय समाज पर पाश्चात्य संस्कृति का बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है जिसके कारण स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय समाज में नैतिक एवं संस्कृति का तेजी से ह्रास हुआ है। समाज में कई कारणों से अन्तर्विरोध देखने को मिल रहा है। आज समाज में उत्पन्न तनाव, सामाजिक असमानता, जातीय भेदभाव और परिवारों के विघटन से समाज में सामाजिक अन्तर्विरोध तेजी से बढ़ रहा है। आज एक वर्ग दूसरे वर्ग, एक जाति दूसरी जाति और एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से आगे निकलने के लिए एक–दूसरे को पीछे धकेल रहे हैं जिससे समाज में हर स्तर पर अन्तर्विरोध तेजी से बढ़ता जा रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मैनेजर पाण्डे, साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका, प्रकाशक, वैज्ञानिक तथा शब्दावली आयोग भारत सरकार हरियाणा ग्रंथ अकादमी पृ.सं. 6

ए.आर. देसाई – भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, मैकानिक इण्डिया, दिल्ली। प्रकाशक पोपुलर प्रकाशक सेज भाषा पृ.सं.

वर्तमान साहित्य, मार्च 2011, संपादक – कुवंर नारायण, रुचिका प्रिंटर्स दिल्ली पृ.सं. 4

हंस, फरवरी 2010, संपादक राजेंद्र यादव, प्रकाशक अक्षर प्रा. लि. अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली पृ.सं. 3

वागार्थ, जनवरी 2011, संपादक विजय संपादक विजय बहादुर सिह पृ.सं. 47

आलोचना, संपादक नामवर सिह प्रकाशक राजकमल प्रकाशक प्रा .लि.पृ.सं. 94

बहुवचन अंक, सितम्बर 2011, सम्पादक ए.अरविन्द, प्रकाशक– महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रिय हिंदी वि .वि. वर्धा पृ.सं. 31

रामनाथ शर्मा, राजेंद्र कुमार शर्मा, भारतीय समाज, संस्थाएं और संस्कृति, प्रकाशक ऐन्त्लातिका पब्लिसर्स नई दिल्ली पृ.सं. 91

बाबू गुलाबराय – भारतीय संस्कृति की रूपरेखा, प्रकाशक – प्रभात प्रकाशक पृ.सं. 1

नया ज्ञानोदय अप्रेल 2010, संपादक रविन्द्र कालिया, प्रकाशक , भारतीय ज्ञानपीठ १८ लोदी रोड, पृ.सं. 66

भूण्डलीकरण और साहित्य, बहुवचन 26–27 संपादक ए अरविन्द प्रकाशक, महात्मागांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी वि वि वर्धा पृ.सं. 126

बहुवचन अंक 32, संपादक, अरविन्द प्रकाशक– महात्मागांधी अंतरराष्टीय हिंदी वि वि, वर्धा पृ.सं.